Total No. of Printed Pages—4

6 SEM TDC DSE HND (CBCS) 1 (H)

2024

(May)

HINDI

(Discipline Specific Elective)

(For Honours)

Paper : DSE–1

(तुलसीदास)

Full Marks : 80
Pass Marks : 32

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×8=8

(क) तुलसीदास जी की भक्ति किस प्रकार की है?

(ख) 'रामचरितमानस' का रचनाकाल क्या है?

(ग) अयोध्या के अंतिम राजा कौन थे?

(घ) राम ने गीधराज जटायु का क्या किया?

(ङ) उत्तरकाण्ड में कितने श्लोक हैं?

(च) बालकाण्ड में कितने अध्याय हैं?

(छ) 'विनय-पत्रिका' के अनुसार तुलसीदास ने सीता माता से अवसर पाने पर क्या करने को कहा?

(ज) 'विनय-पत्रिका' में किस रस की प्रधानता है?

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 4×4=16

(क) तुलसीदास के व्यक्तित्व पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए।

(ख) "तुलसी का 'रामचरितमानस' एक सकल प्रबन्ध काव्य है"— सिद्ध कीजिए।

(ग) तुलसीदास ने निर्गुण को सगुण के बराबर क्यों बताया है? लिखिए।

(घ) तुलसीदास ने अपनी 'कवितावली' के उत्तरकाण्ड में किस आधार पर राम को दयासागर कहा है? संक्षेप में लिखिए।

(ङ) गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'विनय-पत्रिका' के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

(च) तुलसी ने अपने मूढ़ मन को क्या शिक्षा दी? लिखिए।

3. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×2=16

(क) "समाचार जब लछिमन पाए। ब्याकुल बिलख बदन उठि धाए॥
कंप पुलक तन नयन सनीरा। गहे चरन अति प्रेम अधीरा॥
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े। मीनु दीन जनु जल ते काढ़े॥
सोचु हृदयँ बिधि का होनिहारा। सबु सुखु सुकृतु सिरान हमारा॥"

(Continued)

अथवा

आपु हौं आपुको नीकें कै जानत, रावरो राम ! भरायो गढ़ायो।
कीरू ज्यौं नामु रटै तुलसी, सो कहै जगु जानकीनाथ पढ़ायो॥
सोई है खेदु, जो बेदु कहै, न घटै जनु जो रघुबीर बढ़ायो।
हौं तो सदा खरको असवार, तिहारोइ नामु गयंद चढ़ायो॥"

(ख) आँगन खेलत आनँदकंद। रघुकुल-कुमुद-सुखद-चारूचंद॥
सानुज भरत लपन सँग सोहैं। सिसु-भूषन भूषित मन मोहैं॥
तन-दुति मोरचंद जिमि झलकैं। मनहु
उमगि अँग अँग छवि-छलकैं॥
कटि किंकिनि पग पैंजनि बाजैं। पंकज पानि पहुँचियाँ राजैं॥"

अथवा

बावरो रावरो नाह भवानी।
दानि बड़ो दिन देत दये बिनु, बेद-बड़ाई भानी॥
निज घरकी बरवत दिलोकहु, हौ, तुम परम सयानी।
सिवकी दई संपदा देखत, श्री सारदा सिहानी॥
जिनके भाल लिखी लिपि मेरी, सुख की नहीं निसानी।
तिन रंकन की नाक सँवारत, हौं आयो नकबानी॥

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×4=40

(क) तुलसीदास की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।

(ख) "तुलसीदास के 'रामचरितमानस' में सामाजिक आदर्श की स्थापना की गई है।" इस कथन को उदाहरण देकर समझाइए।

(ग) मंथरा और कैकेयी के माध्यम से अयोध्याकाण्ड में निरूपित नारी मनोविज्ञान पर प्रकाश डालिए।

(Turn Over)

(घ) अयोध्याकाण्ड के आधार पर भरत का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(ङ) तुलसीदास की 'कवितावली' में विनय, भक्ति और दर्शन की त्रिवेणी एक साथ प्रवाहित हुई है। इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(च) 'गीतावली' की कथावस्तु का विश्लेषण पठित पाठ के आधार पर कीजिए।

(छ) 'विनय-पत्रिका' में तुलसी ने रामबोला के रूप में अपना जो परिचय दिया है, उसे स्पष्ट कीजिए।

(ज) गीति काव्य की कसौटी पर 'विनय-पत्रिका' का मूल्यांकन कीजिए।

★★★

Total No. of Printed Pages—4

6 SEM TDC DSE HND (CBCS) 2 (H)

2024

(May)

HINDI

(Discipline Specific Elective)

(For Honours)

Paper : DSE–2

(प्रेमचंद)

Full Marks : 80
Pass Marks : 32

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×8=8

(क) कृष्णचंद की पत्नी का नाम क्या था?

(ख) विट्ठलदास कौन था?

(ग) 'कर्बला' दुखांत नाटक है या सुखांत?

(घ) प्रेमचंद के बचपन का नाम क्या था?

(ङ) 'साहित्य का उद्देश्य' निबंध प्रेमचंद का कब का दिया हुआ भाषण है?

(च) साहित्य को प्रेमचंद ने क्या माना है?

(छ) खाला प्रेमचंद की किस कहानी की पात्र है?

(ज) 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी किस पत्रिका में सर्वप्रथम छपी थी?

2. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×3=24

(क) "जन्मभर निर्लोभ रहने के बाद इस समय अपनी आत्मा का बलिदान करने में दारोगा जी को बड़ा दुःख होता था। वह सोचते थे, यदि यही करना था तो आज से पच्चीस साल पहले ही क्यों न किया, अब तक सोने की दीवार खड़ी कर दी होती।"

अथवा

"सतयुग में मनुष्य की मुक्ति ज्ञान से होती थी, त्रेता में सत्य से, द्वापर में भक्ति से, पर इस कलयुग में इसका एक ही मार्ग है, और वह है सेवा। इसी मार्ग पर चलो तुम्हारा उद्धार होगा।"

(ख) "नबी ने शराब को हराम कहा है। यह इस अमृत-रस के साथ कितना घोर अन्याय है। उस समय के लिए यह निषेध सर्वथा उचित था, क्योंकि उन दिनों किसी को यह आनंद भोगने का अवकाश न था। पर अब यह हालत नहीं है।"

अथवा

"मैं अपने फर्ज से वाकिफ हूँ, पर मैं यह सिर्फ अर्ज करने के लिए हाजिर हुआ हूँ कि इस वक्त रियाया पर सख्ती करने से हालात और भी नाजुक हो जाएँगे। जब सल्तनत को किसी दूसरे मुद्दई का खौफ हो तो बादशाह को रियाया के साथ नरमी का बर्ताव करके उसे अपना दोस्त बना लेना मुनासिब है।"

(ग) "ग्रामीणों का यह छोटा-सा दल अपनी विपन्नता से बेखबर, संतोष और धैर्य में मगन चला जा रहा था। बच्चों के लिए नगर की सभी चीजें अनोखी थीं। जिस चीज की ओर ताकते, ताकते रह जाते।"

अथवा

"बिरला ही कोई भला आदमी होगा, जिसके सामने बुढ़िया ने दुःख के आँसू न बहाये हों। किसी ने तो यों ही ऊपरी मन से हूँ-हाँ करके टाल दिया और किसी ने इस अन्याय पर जमाने को गालियाँ दी। कहा—कब्र में पाँव लटके हुए हैं, आज मरे या कल, दूसरा दिन, पर हवस नहीं मानती।"

3. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 12×4=48

(क) "'सेवासदन' समाज की प्रताड़ित नारी के जीवन की करुण कथा है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

(ख) विट्ठलदास के चरित्र का मूल्यांकन कीजिए।

(ग) 'कर्बला' नाटक के आधार पर हुसैन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(घ) एक ऐतिहासिक नाटक के रूप में 'कर्बला' की समीक्षा कीजिए।

(ङ) "साहित्य कला के आध्यात्मिक सामंजस्य का व्यक्त रूप है।" इस कथन की समीक्षा 'साहित्य का उद्देश्य' निबंध के आधार पर कीजिए।

(च) 'साहित्य का उद्देश्य' निबंध के आधार पर प्रेमचंद के साहित्य के विषय में दिए गए विचारों को लिखिए।

(छ) 'दो बैलों की कथा' की समीक्षा कहानी-कला के आधार पर कीजिए।

(ज) "दोनों विलासी थे, पर कायर न थे। उनमें राजनीतिक भावों का अधःपतन हो गया था।" इस कथन की समीक्षा 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के आधार पर कीजिए।

★★★